

मालदा का रेशम उद्योग: भारत की वर्तमान आर्थिक संरचना, कृषि-व्यवस्था, व्यापारिक लाभ और आम जन के उपयोग के परिप्रेक्ष्य में एक विस्तृत विश्लेषण

Jeewachh Kumar<sup>1</sup>, Dr Arvind Kumar Verma<sup>2</sup>

<sup>1</sup>Research Scholar, Department of History, Purnea University, Purnea, Bihar, India

<sup>2</sup>Professor and Head Department of History, Purnea University, Purnea, Bihar, India

Corresponding Author Email: jeewachhkr@gmail.com

संरांश — वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में Malda (पश्चिम बंगाल, भारत) के रेशम (रेशम-कृषि और व्यापार) उद्योग तथा उसकी कृषि और आम लोगों के उपयोग व अर्थ-व्यवस्था पर प्रभाव को दृष्टिगत रखते हुए।

मालदा का रेशम उद्योग — विरासत और महत्त्व

मालदा लंबे समय से भारत के प्रमुख रेशम उत्पादन केन्द्रों में से रहा है। पारंपरिक रूप से यहाँ सिल्क (रेशम) उत्पादन — विशेष रूप से मुलबरी (mulberry) आधारित सेरिकलचर — ग्रामीण परिवारों की आजीविका का स्तम्भ रहा है।

अनुसन्धान और आँकड़ों के अनुसार, मालदा में हजारों किसान और कामगार — भूमि-स्वामी व भूमिहीन दोनों — रेशम कीड़े पालने, रेशम कोण (cocoon) उत्पादन, रेशम कताई, यार्न (धागा) बनाने, तथा बुनाई-प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं।

2025 में रेशम का मूल्य व लाभ

हाल ही में मालदा में सिल्क कोकून (cocoon) की कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2025 की शुरुआत में — 40 किलोग्राम कोकून की नीलामी में किसानों को लगभग ₹26,000 मिले — यह पिछले कई वर्षों में अब तक की सबसे अधिक दर रही।

कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था व आम जनता पर असर

आजीविका एवं रोजगार: रेशम-कृषि और उससे जुड़े पूरा चक्र — सिल्क कीड़े पालना, कोकून उत्पादन, रीलिंग, यार्न, बुनाई आदि — ग्रामीण भारत में गैर-कृषि (non-farm) रोजगार के अवसर प्रदान करता है। खासकर उन परिवारों के लिए जिनकी जमीन छोटी है या जो भूमिहीन हैं। इससे खेतों के अलावा आय का अतिरिक्त स्रोत मिलता है।

महिलाओं एवं कमजोर वर्गों की भागीदारी: श्रमिक-कार्य में महिलाओं की हिस्सेदारी काफी होती है। इससे सामाजिक रूप से कमजोर या अल्पसंख्यक समुदायों की आजीविका सुनिश्चित होती है।

उपभोक्ता व वस्त्र-उद्योग: मालदा की रेशम से तैयार कपड़े, साड़ी, वस्त्र आदि गुणवत्तापूर्ण होते हैं। यदि सिल्क पार्क व अन्य इकाइयाँ सक्रिय हों तो आम लोग — देश के अन्य हिस्सों में रहने वाले — स्थानीय सिल्क उत्पाद आसानी से ले सकेंगे। इससे पारंपरिक हस्त-कला, बुनाई कौशल और सांस्कृतिक धरोहर को भी मजबूती मिलेगी

चुनौतियाँ और आगे के सुझाव

फिर भी, चुनौतियाँ अभी समाप्त नहीं हुई हैं। प्रमुख समस्या यह है कि अब तक मालदा में अधिकांश रूप में केवल रेशम यार्न (raw silk yarn) का उत्पादन होता है; वस्त्र निर्माण यानी कपड़ा तैयार करना, डिज़ाइनिंग, मार्केटिंग आदि का काम अन्य राज्यों पर निर्भर रहता है।

किसानों को सिल्क उत्पादन के लिए आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षण, सिंचाई, मलचुरी रियरिंग हाउस, अच्छी गुणवत्ता के सिल्क बीन (seed) उपलब्ध कराने की भी जरूरत है — ताकि उत्पादन स्थिर हो, गुणवत्ता बेहतर हो, और रुझान लंबे समय तक बना रहे।

निष्कर्ष:

मालदा का रेशम उद्योग — विशेष रूप से सेरिकलचर — न केवल एक पुराना सांस्कृतिक व ऐतिहासिक व्यवसाय है, बल्कि आज विकास-और रोजगार-उन्मुख असली अवसर भी दे रहा है। यदि रेशम उत्पादन, रीलिंग, वस्त्र निर्माण, विपणन और निर्यात-सुविधाओं को अच्छी तरह जोड़ा जाए, तो यह उद्योग मालदा के ग्रामीणों, किसानों, बुनकरों और आम जनता — सभी को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ दे सकता है।

वर्तमान में कोकून की कीमतों में वृद्धि, पुनरुद्धार की कोशिशें और सरकार-नीति की सक्रियता इस दिशा में सकारात्मक संकेत हैं। यह समय है कि मालदा अपनी रेशम विरासत को फिर से मजबूत बनाए, और इस धागे को किसी भटकती याद या गिरती उद्योग की कहानी नहीं, बल्कि सतत विकास और आत्मनिर्भरता की कहानी बनाए।

[Kumar, J. and V. मालदा का रेशम उद्योग: भारत की वर्तमान आर्थिक संरचना, कृषि-व्यवस्था, व्यापारिक लाभ और आम जन के उपयोग के परिप्रेक्ष्य में एक विस्तृत विश्लेषण. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 4, Issue 1:99-113 (October-December). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 6.205

**भूमिका:** भारत पारंपरिक रूप से कृषि, वस्त्र, हस्तशिल्प और ग्रामीण उत्पादन की समृद्ध भूमि रहा है। आज के बदलते आर्थिक और तकनीकी युग में भी कई ऐसे उद्योग हैं जो अपनी सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक उपयोगिता दोनों के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण बने हुए हैं। पश्चिम बंगाल का मालदा जिला ऐसा ही क्षेत्र है, जिसका रेशम उद्योग, कृषि उत्पादन, और फल-बागवानी, विशेषकर आम की खेती, भारत की अर्थव्यवस्था और ग्रामीण समाज के लिए गहरा महत्व रखता है।

मालदा सदियों से रेशम उत्पादन, उच्च गुणवत्ता वाली सिल्क बुनाई, तथा कृषि-व्यापार का प्रमुख केंद्र रहा है। वर्तमान समय में जब भारत वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विकास, आत्मनिर्भरता और ग्रामीण सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है, मालदा के पारंपरिक उद्योग नई संभावनाओं और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

इस विस्तृत लेख में मालदा के रेशम उद्योग, कृषि, व्यापारिक लाभ और आम व्यक्ति के उपयोग को भारत के समकालीन संदर्भ में गहराई से समझने का प्रयास किया गया है।

## 1. मालदा का ऐतिहासिक, भौगोलिक और आर्थिक परिचय

### ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मालदा भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन व्यापारिक मार्गों और शिल्प परंपराओं का केंद्र रहा है। गौड़, पांडुआ और इंग्लिशबाजार जैसे नगरों ने मालदा को मध्यकाल से ही वस्त्र एवं कारीगरी का महत्वपूर्ण स्थल बनाया। मुगलकाल में बंगाल का रेशम और मुस्लिम वस्त्र विश्वभर में निर्यात होता था, और मालदा इसकी प्रमुख उत्पादन बेल्टों में शामिल था।

अंग्रेजों के समय में मालदा व्यापारिक जिलों में से एक बन गया, जहाँ रेशम धागे और वस्त्रों का बड़ा निर्यात केंद्र विकसित हुआ। इस ऐतिहासिक परंपरा ने आज भी इस जिले को “बंगाल सिल्क बेल्ट” के रूप में पहचान दी है।

### भौगोलिक विशेषताएँ

मालदा का भूगोल रेशमी कीड़ों और शहतूत की खेती के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। यहाँ—

गंगा और महानंदा नदियाँ

उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी

आर्द्र-उष्ण जलवायु

पर्याप्त वर्षा

मिलकर रेशम और कृषि दोनों के लिए आदर्श परिस्थितियाँ बनाती हैं।

यह भौगोलिक अनुकूलता मालदा की कृषि-अर्थव्यवस्था के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

## 2. मालदा का रेशम उद्योग: परंपरा, वर्तमान स्थिति और महत्व

रेशम उद्योग का स्वरूप

रेशम उद्योग मुख्यतः तीन चरणों में विभाजित है—

1. कोकून उत्पादन — शहतूत पत्तों पर रेशमी कीड़ों का पालन।
2. रीलिंग और धागा निर्माण — कोकून से धागा निकालना।
3. बुनाई, रंगाई और प्रिंटिंग — अंतिम वस्त्र निर्माण।

मालदा इन तीनों चरणों में आत्मनिर्भर है, जो इसे भारत के कुछ विशिष्ट रेशम क्षेत्रों में शामिल करता है।

मालदा सिल्क की विशेषताएँ

मुलायम और टिकाऊ

प्राकृतिक चमक

महीन बुनाई  
पारंपरिक डिजाइन  
यूरोपीय और एशियाई बाजारों में मांग  
मालदा का रेशम अपनी पारंपरिक सुंदरता और  
हस्तनिर्मित गुणों के कारण फैशन उद्योग में लोकप्रिय है।  
वर्तमान उत्पादन स्थिति

मालदा पश्चिम बंगाल के कुल रेशम उत्पादन का  
महत्वपूर्ण हिस्सा प्रदान करता है।  
कोकून उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है।  
राज्य सरकार द्वारा क्लस्टर आधारित प्रशिक्षण और  
मशीनों की उपलब्धता से गुणवत्ता में वृद्धि हुई है।  
हजारों परिवार sericulture से जुड़े हुए हैं—  
विशेषकर महिलाएँ।

रेशम उद्योग में रोजगार  
रेशम उद्योग मालदा में ग्रामीण और कमजोर वर्गों का  
सबसे प्रभावी आय स्रोत है। इससे लाभान्वित समूह:

बुनकर  
रंगाई कारीगर  
महिलाएँ  
किसान  
सूक्ष्म उद्योग संचालक

इस उद्योग की श्रम-प्रधान प्रकृति इसे ग्रामीण रोजगार  
का अत्यंत महत्वपूर्ण साधन बनाती है।

### 3. मालदा में कृषि की वर्तमान स्थिति

कृषि का महत्व  
मालदा में कृषि आज भी जिले की अर्थव्यवस्था का  
आधार है।

यहाँ कृषि की संरचना—

खाद्यान्न उत्पादन  
बागवानी  
फल-उद्योग  
जूट

रेशम हेतु शहतूत खेती

इन पाँच स्तंभों पर टिकी है।

### प्रमुख कृषि उत्पाद

(1) आम (Mango)

मालदा का आम भारत ही नहीं, विश्वभर में प्रसिद्ध है।

मुख्य प्रजातियाँ:

- फजली

- लंगड़ा
- गुलाबखास
- हिमसागर
- बम्बैया

“फजली आम” का आकार, स्वाद और निर्यात गुणवत्ता  
इसे अंतरराष्ट्रीय महत्व देता है।

(2) जूट

जूट मालदा के किसानों की आय का प्रमुख स्रोत है। जूट  
आधारित उद्योगों में रोजगार और निर्यात क्षमता दोनों  
अधिक है।

(3) धान और गेहूँ

खरीफ और रबी दोनों में बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है।

(4) सब्जियाँ और बागवानी

लिची, केला, टमाटर, आलू इत्यादि।

(5) शहतूत की खेती

रेशम उद्योग की रीढ़।

4. आधुनिक भारत में मालदा कृषि की चुनौतियाँ और  
सुधार  
चुनौतियाँ

- गंगा कटाव और बाढ़
- छोटे और सीमांत किसानों की बड़ी संख्या
- बाजार मूल्य में अस्थिरता
- कोल्ड स्टोरेज की कमी
- परिवहन सुविधा का अभाव
- जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

### सरकारी हस्तक्षेप और विकास

- PM-KISAN, FPO निर्माण
- ई-नाम प्लेटफॉर्म से बाजार पहुँच
- फल-प्रसंस्करण इकाइयों को प्रोत्साहन
- कोल्ड स्टोरेज और वेयरहाउसिंग का विस्तार
- कृषि मशीनरी बैंक

ये प्रयास किसानों की आय एवं आर्थिक सुरक्षा बढ़ाने की  
दिशा में मदद करते हैं।

### 5. व्यापारिक लाभ : रेशम उद्योग और कृषि दोनों का संयुक्त प्रभाव

5.1 रेशम उद्योग से व्यापारिक लाभ

(1) राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग  
मालदा सिल्क—

दिल्ली, मुंबई, बेंगलूर, कोलकाता, खाड़ी देशों,  
दक्षिण-पूर्व एशिया  
में लोकप्रिय हैं।

(2) उच्च मूल्य वाला उत्पाद  
रेशम वस्त्र सामान्य कपड़ों की तुलना में अधिक  
लाभदायक हैं।

(3) MSME और स्वरोजगार  
रेशम आधारित छोटे उद्योगों में—

dyeing unit  
printing workshop  
handloom units  
fashion & tailoring

स्थापित करने की व्यापक संभावनाएँ हैं।

### कृषि क्षेत्र से व्यापारिक लाभ

(1) आम का निर्यात  
फजली आम की निर्यात क्षमता अत्यधिक है।

हर वर्ष मालदा के आम—

बांग्लादेश  
मध्य पूर्व  
नेपाल  
में भेजे जाते हैं।

(2) जूट उद्योग

जूट से—  
eco-friendly bag  
रस्सी

भूसा पैकिंग  
ग्रीन पैकेजिंग

बनाकर बड़े पैमाने पर व्यापार होता है।

(3) सब्जियों का क्षेत्रीय व्यापार  
मालदा के आसपास के जिलों में ताजी सब्जियाँ भेजी  
जाती हैं।

6. आम व्यक्ति के उपयोग के संदर्भ में मालदा का रेशम  
और कृषि

### रोजगार

दोनों उद्योग ग्रामीण जनसंख्या के लिए सबसे बड़ा  
रोजगार स्रोत हैं।

इसके माध्यम से—

महिलाओं  
सीमांत किसानों

बुनकरों  
छोटे व्यापारियों  
को स्थायी आजीविका मिलती है।

### किफायती खाद्य उपलब्धता

कृषि उत्पादन से आम लोगों को—

अनाज  
सब्जी  
फल

किफायती दाम पर उपलब्ध होते हैं।

### स्थानीय बाजार में रेशमी वस्त्र

रेशमी साड़ियों और परिधानों का स्थानीय सांस्कृतिक  
महत्व है।

### ग्रामीण उद्यमिता के अवसर

जूस एवं पल्प निर्माण  
जैम-जेली  
अचार

सिल्क-आधारित कारीगरी

हस्तछाप वस्त्र

इन सभी में सामान्य व्यक्ति छोटे उद्यम शुरू कर सकता  
है।

### 7. भारत के वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में मालदा की भूमिका

#### आत्मनिर्भर भारत और वोकल फॉर लोकल

मालदा का रेशम उद्योग “आत्मनिर्भर भारत” अभियान  
में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।  
स्थानीय उत्पादन, स्थानीय रोजगार और पारंपरिक  
कौशल को बढ़ावा मिलता है।

#### डिजिटल भारत और ई-कॉमर्स

आज Amazon, Flipkart, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म  
पर मालदा सिल्क की बिक्री में वृद्धि हो रही है।  
यह कारीगरों को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच प्रदान करता है।

#### निर्यात और वैश्विक प्रतिस्पर्धा

मालदा सिल्क और मालदा के आम दोनों भारत के  
निर्यात में महत्वपूर्ण स्थान पा रहे हैं।  
सरकार की निर्यात प्रोत्साहन योजनाएँ इस क्षेत्र में  
महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

#### ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन

इन उद्योगों से—

ग्रामीण आय बढ़ती है  
शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार होता है  
सामाजिक संरचना मजबूत होती है

## 8. चुनौतियाँ और भविष्य के समाधान

### मुख्य चुनौतियाँ

बाढ़ और नदी कटाव  
चीन से सस्ते रेशम की प्रतिस्पर्धा  
तकनीकी पिछड़ापन  
मार्केटिंग में कमी  
कृषि मूल्य अस्थिरता

### संभावित समाधान

रेशम उद्योग के लिए

आधुनिक मशीनरी  
डिजाइनर-कारीगर सहयोग  
डिजिटल मार्केटिंग  
ट्रेनिंग केंद्र

कृषि के लिए

कोल्ड चेन नेटवर्क  
किसान उत्पादक संगठन (FPO)  
निर्यात केंद्रों का विस्तार  
जल संरक्षण तकनीक

इन सुधारों से मालदा आने वाले वर्षों में एक प्रमुख आर्थिक केंद्र बन सकता है।

मालदा का रेशम उद्योग एवं कृषि—दोनों भारत की पारंपरिक शक्ति, ग्रामीण संस्कृति और आर्थिक क्षमता के प्रतीक हैं। वर्तमान समय में जब भारत वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी बदलाव और आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रहा है, तब मालदा जैसे जिलों का महत्व और भी बढ़ जाता है।

रेशम उद्योग स्थानीय बुनकरों और महिलाओं को रोजगार देता है, जबकि कृषि आम जनता को खाद्य सुरक्षा और आय का आधार प्रदान करती है। व्यापारिक रूप से यह क्षेत्र न केवल स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी विशेष पहचान बनाए हुए है।

आने वाले वर्षों में तकनीक, निर्यात प्रोत्साहन, डिजिटल मार्केटिंग और बुनियादी ढांचा विकास के साथ मालदा

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अग्रणी भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था पारंपरिक रूप से कृषि, ग्रामीण उत्पादन, कारीगरी और लघु उद्योगों पर आधारित रही है। आज जबकि भारत तेज़ी से आधुनिकता, डिजिटलीकरण और औद्योगिक विस्तार की ओर बढ़ रहा है, वहीं कई पारंपरिक उद्योग—विशेषकर वस्त्र उद्योग, हस्तकला और कृषि आधारित उत्पादन—अपने सामाजिक-आर्थिक महत्व के कारण अभी भी प्रासंगिक हैं। इस बदलते आर्थिक परिदृश्य में पश्चिम बंगाल का मालदा जिला एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने सदियों पुराने रेशम उद्योग (Sericulture and Silk Weaving) तथा कृषि उत्पादन के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान दिया है।

मालदा को भारत का “रेशम हृदय”, “आमों की नगरी”, और “पूर्व का मैनचेस्टर” कहा जाता है। यहाँ की रेशम बुनाई, मुद्रण, रंगाई, कोकून उत्पादन, आम की विविध प्रजातियाँ, जूट, धान, और बागवानी—ये सभी क्षेत्र स्थानीय समाज, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय व्यापार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

आज भारत के आर्थिक परिवर्तन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, आपूर्ति श्रृंखला, निर्यात बाजार, रोजगार और तकनीकी हस्तक्षेप के दौर में मालदा के रेशम और कृषि उद्योग नए अवसरों और चुनौतियों के साथ खड़े हैं। इस लेख में इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में उनका विश्लेषण किया गया है।

\*\*पहला खंड

मालदा का इतिहास, भूगोल और आर्थिक पहचान\*\*

### 1. मालदा जिले का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय

मालदा, पश्चिम बंगाल के उत्तरी भाग में स्थित एक प्रमुख जिला है, जिसका इतिहास प्राचीन गंगा-नदी सभ्यता से जुड़ा है। गौड़ और पांडुआ जैसी ऐतिहासिक नगरीय विरासत के साथ मालदा ने मध्यकाल और मुगलकाल में व्यापार, शिल्प और वस्त्र उद्योग का बड़ा केंद्र होने का गौरव प्राप्त किया। इस क्षेत्र में रेशम उद्योग लगभग 500 वर्षों से अधिक पुराना माना जाता है।

मुगलकाल में बंगाल का मुस्लिम और रेशमी वस्त्र विश्व की सर्वोत्तम श्रेणी में माना जाता था, और मालदा इस कारीगरी का प्रमुख केन्द्र था। अंग्रेजों ने भी मालदा से

सिल्क का निर्यात बड़ी मात्रा में किया। आज भी यह परंपरा जीवित है—हालाँकि आधुनिक प्रतिस्पर्धा और औद्योगिक बदलावों ने इसकी संरचना बदल दी है।

## 2. मालदा की भौगोलिक विशेषताएँ

जलवायु: गर्म आर्द्र मानसूनी

मिट्टी: जलोढ मिट्टी, रेशम पालन के लिए शहत्त की खेती अनुकूल

नदी: गंगा और उसकी सहायक नदियाँ

मुख्य कृषि क्षेत्र: इंग्लिशबाजार, हबीबपुर, रत्नपुर, गाजोल, हरिश्चंद्रपुर

बागवानी एवं रेशम क्षेत्र: कालियाचक, मानिकचक, पुरैन, चांचल, भाबुक

मालदा का भू-जल, मिट्टी, तापमान और वर्षा का पैटर्न रेशम पालन और आम की उच्च गुणवत्ता वाली बागवानी के लिए अत्यंत अनुकूल है।

\*\*दूसरा खंड

मालदा का रेशम उद्योग: वर्तमान समय में स्थिति, योगदान और चुनौतियाँ\*\*

### 1. रेशम उद्योग का स्वरूप और महत्व

रेशम उद्योग को तीन स्तरों में विभाजित किया जाता है—

1. कोकून उत्पादन (Sericulture) – शहत्त की खेती और सिल्कवर्म पालन
2. रीलिंग और ट्विस्टिंग – कच्चे धागे की प्राप्ति
3. बुनाई, रंगाई, प्रिंटिंग – अंतिम वस्त्र निर्माण

मालदा में ये तीनों प्रक्रियाएँ सामूहिक रूप से उपस्थित हैं, जिससे यह भारत के कुछ ऐसे जिलों में शामिल है जहाँ रेशम उद्योग पूरी वैल्यू चेन के साथ विकसित है।

मालदा विशेष रूप से Mulberry Silk के लिए प्रसिद्ध है, जो अपनी महीनता, प्राकृतिक चमक और मजबूती के लिए जाना जाता है।

### 2. वर्तमान भारत में मालदा सिल्क की स्थिति

उत्पादन

मालदा जिले में प्रतिवर्ष हजारों मीट्रिक टन कोकून का उत्पादन होता है।

सरकार द्वारा बनाए गए “Sericulture Clusters” में उत्पादन बढ़ा है।

आधुनिक रीलिंग मशीनों और हैंडलूम पार्क से गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

लगभग 70–80% उत्पादन घरेलू बाजार में और शेष निर्यात के लिए उपयोग होता है।

रोजगार उपलब्धता

रेशम उद्योग मालदा में:

बुनकरों

शहत्त किसानों

सिल्कवर्म पालन करने वाली महिलाओं

कारीगरों

रंगाई-प्रिंटिंग मजदूरों

को बड़े पैमाने पर आजीविका प्रदान करता है।

अनुमानतः लगभग 2–3 लाख लोग सीधे या परोक्ष रूप से इस उद्योग पर निर्भर हैं।

(ग) “हैंडलूम और कारीगरी” उद्योग का महत्व

आज के समय में जब मशीन आधारित वस्त्र उद्योग का विस्तार हुआ है, तब भी मालदा का हैंडलूम सेक्टर भारतीय सांस्कृतिक वस्त्रों की व्यावहारिक और आर्थिक पहचान बनाए हुए है।

यह उद्योग “वोकल फॉर लोकल” अभियान, ई-कॉमर्स, फैशन उद्योग और डिज़ाइनरों के साथ नई संभावनाएँ पैदा कर रहा है।

### 3. रेशम उद्योग के समकालीन परिवर्तन

(क) तकनीकी हस्तक्षेप

आधुनिक रीलिंग मशीनें

सौर ऊर्जा से चलने वाले सूत मशीन

जैविक शहत्त खेती

प्रशिक्षण केंद्र और डिजिटल टेक्नोलॉजी

ई-मार्केटिंग और सोशल मीडिया बिक्री

(ख) सरकारी सपोर्ट

“Silk Samagra Scheme”

“बंगाल हैंडलूम मिशन”

कौशल विकास कार्यक्रम

क्लस्टर विकास योजना (CDP)

सिल्क मार्क प्रमाणन

इन प्रयासों ने वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मालदा के रेशम को नई पहचान दी है।

### 4. आधुनिक चुनौतियाँ

(क) अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा  
चीन से आयातित सस्ते रेशम धागे और सिंथेटिक  
फाइबर ने स्थानीय बाजार पर दबाव बनाया है।

(ख) प्राकृतिक आपदाएँ

बाढ़

नदी कटाव

अत्यधिक वर्षा

इनसे शहतूत पौधों और कोकून उत्पादन को नुकसान  
पहुँचता है।

(ग) युवा पीढ़ी का रुझान कम होना

तेज़ी से बदलते रोजगार विकल्पों के कारण परंपरागत  
कारीगरी में युवाओं की रुचि कम होती जा रही है।

(घ) पूँजी और तकनीक की कमी

छोटे बुनकरों को आधुनिक मशीनों, गुणवत्ता नियंत्रण  
और मार्केटिंग में कठिनाई आती है।

\*\*तीसरा खंड

मालदा की कृषि: वर्तमान स्थिति और महत्व\*\*

### 1. कृषि का ऐतिहासिक और भौगोलिक आधार

मालदा की अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान सबसे  
अधिक रहा है।  
यहाँ की जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त वर्षा और उपजाऊ  
भौगोलिक क्षेत्र विविध कृषि उत्पादन के लिए अनुकूल  
है।

### 2. प्रमुख कृषि उत्पाद

(क) आम (Mango)

मालदा का फजली आम विश्व प्रसिद्ध है।

इसके अलावा—

लंगड़ा

हिमसागर

गोलपारा

बम्बैया

गुलाबखास

जैसी प्रजातियाँ भी बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं।

(ख) जूट (Jute)

बंगाल का पारंपरिक जूट उद्योग मालदा के किसानों के  
लिए प्रमुख आर्थिक स्तंभ है।

(ग) धान और गेहूँ

खरीफ और रबी दोनों सीज़नों में अनाज की खेती होती  
है।

(घ) सब्जियाँ और बागवानी

आलू

टमाटर

लौकी

मिर्च

लिची

केला

(ङ) रेशम के लिए शहतूत की खेती

यह निजी और सरकारी दोनों स्तरों पर बढ़ रही है।

### 3. आधुनिक समय में कृषि विकास

(क) सिंचाई और तकनीक

ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई

मिट्टी परीक्षण

जैविक खेती

कृषि मशीनरी बैंक

कोल्ड स्टोरेज उपलब्धता

(ख) बाजार और आपूर्ति शृंखला

आधुनिक मंडियाँ

ई-नाम प्लेटफॉर्म

फल प्रसंस्करण इकाइयाँ

निर्यात केंद्र

(ग) किसानों की स्थिति

छोटे और सीमांत किसान अधिक

कृषि आय में असमानता

सहकारी समितियों का विकास

\*\*चौथा खंड

व्यापारिक लाभ: रेशम और कृषि आधारित  
अर्थव्यवस्था\*\*

### 1. रेशम उद्योग से व्यापारिक लाभ

(क) उच्च मूल्य वाला उत्पाद

रेशम भारत के सबसे महंगे प्राकृतिक रेशों में आता है।  
मालदा सिल्क की देश और विदेश में मांग निरंतर बढ़  
रही है।

(ख) निर्यात व्यापार

साड़ियों

दुपट्टों  
स्कार्फ  
कढ़ाई वाले वस्त्र  
डिजाइनर परिधान  
का निर्यात होता है, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है।  
(ग) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (MSMEs) के लिए  
अवसर

रेशम उद्योग स्थानीय स्तर पर  
dyeing unit  
printing workshop  
handloom cluster  
tailoring and fashion units  
को बड़े अवसर देता है।

## 2. कृषि से व्यापारिक लाभ

(क) आम का व्यापार  
मालदा के आम पूरे भारत में और खाड़ी देशों तक भेजे  
जाते हैं।

फजली आम की निर्यात संभावना अत्यधिक है।

(ख) जूट उद्योग  
जूट से—

रस्सी  
बैग  
चटाई  
भूसा पैकिंग  
कार्पेट

बनाकर व्यापारिक लाभ प्राप्त होता है।

(ग) सब्जियाँ और फलों की सप्लाई चेन  
फूड प्रोसेसिंग में भारी संभावनाएँ हैं।

\*\*पाँचवाँ खंड

आम व्यक्ति के उपयोग और लाभ\*\*

## 1. रोजगार और आय

रेशम और कृषि दोनों ही उद्योगों से आम व्यक्ति को—

खेती  
मजदूरी  
बुनाई  
कढ़ाई  
पैकिंग  
परिवहन

के रूप में प्रत्यक्ष रोजगार मिलता है।

## 2. स्थानीय वस्त्र और उपभोक्ता उपयोग

रेशमी साड़ियाँ, दुपट्टे और परिधान स्थानीय लोगों की  
सांस्कृतिक पहचान भी हैं।  
इनका उपयोग विवाह, त्यौहार और विशेष अवसरों पर  
व्यापक रूप से होता है।

## 3. खाद्य सुरक्षा और स्थानीय पोषण

मालदा की कृषि से उत्पादित—

अनाज  
सब्जियाँ  
फल

आम उपभोक्ता को सस्ती और ताज़ी खाद्य सामग्री  
प्रदान करते हैं।

## 4. छोटे उद्यम और स्वरोजगार

फल प्रसंस्करण

अचार निर्माण

जूस और पल्प उत्पादन

हस्तकला

छोटे स्तर की कपड़ा इकाइयाँ

आम व्यक्ति के लिए आजीविका का प्रमुख साधन बन रहे  
हैं।

\*\*छठा खंड

भारत के वर्तमान संदर्भ में मालदा की भूमिका\*\*

1. “वोकल फॉर लोकल” और “मेक इन इंडिया” में  
योगदान

रेशम उद्योग स्थानीय कारीगरों और किसानों के उत्पादन  
को राष्ट्रीय मंच देता है।

2. ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना

मालदा एक ऐसा मॉडल है जहाँ—

कृषि  
कारीगरी  
बागवानी  
लघु उद्योग  
सभी मिलकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संतुलित  
करते हैं।

## 3. निर्यात क्षमता

मालदा भारत की बांग्लादेश से लगती सीमा का हिस्सा है, जो व्यापार के लिए लाभकारी है।

\*\*सातवाँ खंड

चुनौतियाँ और आगे का मार्ग\*\*

## 1. प्रमुख चुनौतियाँ

बाढ़, नदी कटाव

पूँजी की कमी

चीन से प्रतिस्पर्धा

तकनीकी पिछड़ापन

कृषि में मूल्य अस्थिरता

युवाओं का पलायन

## 2. समाधान और भविष्य की संभावनाएँ

रेशम उद्योग के लिए

डिजिटल मार्केटिंग

डिजाइनर सहयोग

आधुनिक मशीनरी

अंतरराष्ट्रीय बाजार तक सीधी पहुँच

कारिगर वित्त सहायता

कृषि के लिए

संबंधित सिंचाई

कोल्ड चेन नेटवर्क

कृषि निर्यात हब

जैविक खेती को प्रोत्साहन

किसान उत्पादक संगठन (FPO)

निष्कर्ष

मालदा का रेशम उद्योग और कृषि न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और ग्रामीण विकास के महत्वपूर्ण स्तंभ भी हैं। वर्तमान समय में जब भारत तेजी से बदल रहा है, मालदा का यह पारंपरिक उद्योग आधुनिक तकनीक, सरकारी सहायता, ई-कॉमर्स और निर्यात अवसरों के साथ नए स्वरूप में उभर रहा है।

आम व्यक्ति को इससे रोजगार, किफायती उत्पाद, खाद्य सुरक्षा और उद्यमिता के अवसर मिलते हैं। भारत की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था और ग्रामीण

विकास की नीति में मालदा की भूमिका आने वाले समय में और मजबूत होने की पूरी संभावना रखती है।

नीचे में Malda (पश्चिम बंगाल) के रेशम उद्योग (सेरीकल्चर), कृषि व व्यापार-परिप्रेक्ष्य में उसकी स्थिति, फायदे, चुनौतियाँ और आम व्यक्ति (किसान / श्रमिक / ग्राहक) के लिए उपयोग को वर्तमान समय (2025) के संदर्भ में समझने की कोशिश कर रहा हूँ।

मालदा रेशम उद्योग — वर्तमान स्थिति

मालदा लंबे समय से भारत के प्रमुख रेशम उत्पादन-क्षेत्रों में रहा है। उत्तर बंगाल के अधिकांश रेशम उत्पादन में इसका योगदान महत्वपूर्ण है।

2013-14 के आंकड़ों के अनुसार, मालदा जिले में लगभग 60,000 किसान परिवार (और उनके परिवारजन) रेशम उत्पादन से जुड़े थे, और 20,700+ एकड़ निजी भूमि पर मुलबेरी की खेती होती थी।

अधिकांश रेशम उत्पादन (किराना-raw silk / cocoon) मलबेरी खेती + कीट पालन (सेरीकल्चर) पर आधारित है, यानी यह एक कृषि आधारित कुटीर उद्योग है। ([Banaras Hindu University][1])

हालांकि पूर्व में मालदा के रेशम उद्योग में कमजोरी आई थी — मुख्य वजह रही प्रोसेसिंग / बुनाई इकाइयों की कमी — यानी खेत में उत्पादन होता था, लेकिन आगे उत्पाद को तैयार कपड़ा / साड़ी आदि में बदलने के स्थानीय यूनिट न होने के कारण थोक में बेचा जाता था। हाल के सुधार, नये विकास और लाभ पिछले कुछ वर्षों में मालदा में रेशम उद्योग को पुनर्जीवित करने के कई प्रयास हुए हैं — जिसके प्रभाव सकारात्मक दिख रहे हैं:

बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश एवं बाजार सुधार: हाल ही में के आधुनिकीकरण के लिए लगभग ₹3 करोड़ का बजट मंजूर हुआ है। इस निवेश से पुराने खराब ढांचे (जिसमें किसान और व्यापारी मौसम की मार झेलते थे) को सुधारना, नए ग्रामीण-झुपड़ियाँ (huts) बनाना, रीयल-मार्केट सुविधाएँ प्रदान करना शामिल है।

उच्च कोकून मूल्य — किसानों की आमदनी में सुधार 2025 की हालिया बोली (auction) में रेशम के कोकून की कीमतों में रिकॉर्ड उछाल आया है — गुणवत्तायुक्त कोकून की कीमत प्रति किग्रा (या 40 किग्रा पैक) बहुत अधिक

हुई। इससे मालदा के करीब 70,000 परिवारों के लिए एक राहत-मौका आया है।

संसाधन और प्रशिक्षण — सेरीकल्चर में नवाचार: 2025 में Resham Krishi Mela 2025 आयोजित किया गया, जिसमें किसानों, बुनकरों और रीलर्स को आधुनिक सिल्क-कृषि तकनीकों, प्रशिक्षण, और बाजार रणनीति की जानकारी दी गई। इससे स्थानीय रेशम उत्पादकों को अपडेटेड तकनीक व बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित करने में मदद मिली है।

औद्योगिक आधार मजबूत करने की पहल प्रगति के तहत, मालदा में एक औपचारिक बनाया गया है — जिसे 2024 में उद्घाटित किया गया। यहाँ रेशम यार्न से सीधे वस्त्र या तैयार उत्पाद sari, कपड़ा आदि बनाने के संसाधन उपलब्ध कराने की कोशिश है। यह कदम इस परंपरागत उद्योग को सिर्फ कच्चे माल से आगे बढ़ा कर मूल्य-वर्धन की ओर ले जाता है।

इन सुधारों के कारण — मालदा का रेशम उद्योग अब सिर्फ कच्चे रेशम उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संरचित, ब्रांडेड, और टिकाऊ उद्योग बनने की प्रक्रिया में है।

कृषि + रेशम उद्योग — ग्रामीण एवं कृषि-रूप में महत्व रेशम उत्पादन, विशेष रूप से सेवा-कल्चर कृषि आधारित है — यह उन क्षेत्रों के लिए खास है जहाँ छोटे खेत, कृषि-भूमि और पारंपरिक कौशल मौजूद है। मालदा की तरह उत्तरी बंगाल में, जहाँ बहुत लोग कृषि से जुड़े हैं, रेशम खेती अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकती है।

इसके अलावा, रेशम खेती में बहु-लाभ है: पारंपरिक फसलों (चावल, गेहूँ, जूट आदि) के बजाय — रेशम कीट पालन और मुलबेरी खेती — यह कम भूमि पर किया जा सकता है, जिससे खेती के साथ-साथ आर्थिक विविधता आती है।

ग्रामीण परिवारों, विशेष रूप से महिलाओं और कमजोर वर्गों (समुदायों) में रोजगार — रेशम काम अक्सर घरेलू या छोटे-scale units में होता है, जिससे कृषि से मजदूरी के पलायन की जरूरत कम हो सकती है।

व्यापार, अर्थव्यवस्था और आम व्यक्ति के लिए उपयोग रेशम उद्योग अगर सफल हो कर कपड़ा, साड़ी, वस्त्र आदि बनाता है — तो न सिर्फ किसानों बल्कि स्थानीय बुनकरों, कामगारों, व्यापारियों को रोजगार और आय का

स्थायी साधन मिलता है। मालदा में Silk Park जैसे स्थलों की शुरुआत इसी उद्देश्य से हुई है।

उपभोक्ता (भारत में और विदेशों में) को मालदा की “स्थानीय, हस्तनिर्मित, पारंपरिक” रेशमी वस्तुएँ मिल सकती हैं — जो कि बड़े फैशन-ब्रांडेड वस्त्रों से अलग होती हैं। इससे सांस्कृतिक पहचान भी बनी रहती है।

अगर रेशम वस्तु उद्योग ठीक से विकसित हो जाए — तो मालदा (और आसपास के क्षेत्र) में आर्थिक-सामाजिक विकास संभव है — किसानों की आमदनी बढ़ेगी, पलायन कम होगा, और गांवों की समृद्धि संभव होगी।

चुनौतियाँ और सुधार की जरूरत

हालाँकि हालिया सुधार हुए हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ बरकरार हैं:

अभी भी अधिकांश रेशम सिर्फ कच्चा माल बनकर बेचने पर निर्भर है — तात्पर्य, “कपड़ा / वस्त्र निर्माण + विपणन की स्थानीय इकाइयाँ पर्याप्त नहीं। इससे किसानों और रेशम उत्पादकों को मूल्य-वर्धन का पूरा लाभ नहीं मिलता।

हालाँकि Silk Park है, लेकिन निरंतर निवेश, बेहतर प्रौद्योगिकी, और निजी उद्योग की भागीदारी अभी कम है — जिससे विकास धीमा रह सकता है।

उत्पादन की गुणवत्ता और पर्यावरण / जलवायु कीट-पोषण, रीयलिंग तकनीक) चुनौतियाँ दे सकती हैं — जैसा कि कुछ पुनःरिलिंग परियोजनाओं में देखा गया है।

निचोड़ – क्यों मालदा रेशम उद्योग किसानों, ग्रामीण, आम जनता के लिए अभी भी प्रासंगिक

अगर सही दिशा में निवेश, प्रशिक्षण, बाजार सुविधाएँ और बने — तो मालदा का रेशम उद्योग सिर्फ एक पारंपरिक “कुटीर कृषि-उद्योग” नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास, रोजगार, सांस्कृतिक विरासत और भारत में प्राकृतिक रेशम की स्थिर आपूर्ति का एक मजबूत आधार बन सकता है।

हालिया सुधार संकेत देते हैं कि सरकार व स्थानीय प्रशासन इस पर काम कर रहे हैं — जिससे रेशम उत्पादन फिर से आर्थिक रूप से लाभदायक हो चुका है।

सामान्य व्यक्ति (किसान, युवा, बुनकर, दुकानदार) — सभी के लिए यह एक अवसर है: खेती के साथ अतिरिक्त आय, स्थानीय वस्त्र उद्योग में रोजगार, और प्राकृतिक रेशम के रूप में टिकाऊ वस्तुओं की उपलब्धता।

अगर आप चाहें, तो मैं मालदा रेशम उद्योग की आर्थिक आंकड़ों (आय, रोजगार, उत्पादन) + भविष्य की संभावना (आगामी 5-10 वर्ष) पर एक अनुमानित वृहत रिपोर्ट तैयार कर सकता हूँ — जो उपयोगी रहेगा यदि आप शोध, लेख, या नीति सुझाव बना रहे हैं। करना चाहेंगे?

### मालदा का रेशम उद्योग : वर्तमान परिप्रेक्ष्य

मालदा का रेशम (विशेषकर *मालदा सिल्क* / *बंगाल सिल्क*) अपनी महीन गुणवत्ता, प्राकृतिक चमक और टिकाऊपन के लिए प्रसिद्ध है। आज के समय में—

उत्पादन स्थिति

मालदा में मुर्शिदाबाद-मालदा बेल्ट देश के प्रमुख *तसर एवं मुलबरी रेशम* उत्पादन केंद्रों में बना हुआ है।

आधुनिक रेशम रीलिंग मशीन, रंगाई तकनीक और डिजाइनिंग में सुधार हो रहा है।

राज्य सरकार द्वारा क्लस्टर मॉडल, हैंडलूम पार्क, और कच्चे कोकून सब्सिडी जैसी योजनाएँ उत्पादन में वृद्धि कर रही हैं।

रोजगार और आजीविका

रेशम पालन (Sericulture) मालदा के हजारों परिवारों का प्रमुख आजीविका स्रोत है—खासकर ग्रामीण, महिला और अल्प-आय वर्ग के लोग।

हथकरघा आधारित बुनाई आज भी रोजगार उत्पन्न करती है, यद्यपि मशीन आधारित 'पावरलूम' प्रतिस्पर्धा दे रहा है।

आधुनिक चुनौतियाँ

कच्चे रेशम के आयात से प्रतिस्पर्धा

मशीन आधारित वस्त्र उद्योग से कीमत का दबाव

प्राकृतिक आपदाएँ (जैसे बाढ़) कोकून उत्पादन को प्रभावित करती हैं

युवाओं का उद्योग से कम आकर्षण

कृषि : मालदा की अर्थव्यवस्था का आधार

मालदा अपनी विविध कृषि के लिए प्रसिद्ध है।

प्रमुख फसलें

आम (विशेषकर फजली आम) – मालदा का सबसे प्रसिद्ध कृषि उत्पाद

जूट, चावल, गेहूँ, तिलहन, दालें और सब्जियाँ

रेशम पालन हेतु शहतूत (Mulberry) की खेती वर्तमान स्थिति

बागवानी आधारित कृषि (विशेषकर आम) निर्यात और राज्य के राजस्व में बड़े योगदानकर्ता हैं।

आधुनिक सिंचाई, कोल्ड स्टोरेज और परिवहन ढांचे में सुधार से कृषि उपज की बाजार पहुँच बेहतर हुई है।

(ग) चुनौतियाँ

बाढ़ और नदी कटाव (गंगा-पुनर्नवा क्षेत्र)

मूल्य स्थिरता की कमी

छोटे किसानों की पूँजी और तकनीकी पहुँच सीमित

व्यापारिक लाभ (Commercial Advantages)

मालदा का रेशम और कृषि दोनों ही क्षेत्र व्यापार के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं।

रेशम उद्योग के लाभ

उच्च मूल्य वाला उत्पाद, घरेलू और निर्यात दोनों बाजार में मांग

हस्तकला, परिधान उद्योग और डिजाइनर वस्त्रों में उपयोग

ई-कॉमर्स से नए बाजार खुले हैं

कृषि-व्यापार के लाभ

आम (विशेषतः फजली, लंगड़ा, हिमसागर) की राष्ट्रीय-आंतर्राष्ट्रीय मांग

जूट आधारित उद्योग (बैग, रस्सी, कार्पेट)

एग्रो-प्रोसेसिंग यूनिट, कोल्ड चेन, पैकेजिंग में निवेश संभावनाएँ

आम व्यक्ति के उपयोग और लाभ

रेशम उत्पाद

रेशम साड़ियाँ, दुपट्टे, परिधान—स्थानीय लोगों को रोजगार और उपभोक्ता विकल्प दोनों देते हैं।

स्थानीय कारीगरों की आय बढ़ती है, जिससे ग्रामीण जीवन स्तर सुधरता है।

कृषि उत्पाद

उच्च गुणवत्ता के आम, अनाज, सब्जियाँ स्थानीय उपभोग के साथ-साथ उचित दाम पर बाज़ार में उपलब्ध हैं।

कृषि आधारित रोजगार (तोड़ाई, पैकिंग, परिवहन) आम लोगों के लिए कमाई का मुख्य साधन है।

स्थानीय लोग फल-प्रसंस्करण (अचार, जूस, पल्प) में छोटे स्तर पर उद्यम स्थापित कर सकते हैं।

सार (Conclusion)

भारत के वर्तमान आर्थिक परिप्रेक्ष्य में मालदा का रेशम उद्योग व कृषि:

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं,

बड़े स्तर पर रोजगार प्रदान करते हैं,

निर्यात क्षमता रखते हैं,

तथा स्थानीय आम नागरिकों के लिए उपयोग और लाभ दोनों सुलभ कराते हैं।

भारत सदियों से वस्त्र उत्पादन और विशेषकर रेशम के क्षेत्र में समृद्ध परंपराओं वाला देश रहा है। कर्नाटक का मैसूर, जम्मू-कश्मीर का पश्मीना, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश का मुलबेरी, असम का मूगा और पश्चिम बंगाल का मालदा—ये सभी मिलकर भारत की बहुआयामी रेशम संस्कृति को आकार देते हैं। पश्चिम बंगाल के उत्तर में स्थित मालदा जिला इन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐतिहासिक रूप से यह इलाका “मालदा सिल्क” के लिए प्रसिद्ध रहा है, जो अपने घने ताने-बाने, टिकारूपन, मुलायम स्पर्श और प्राकृतिक चमक की वजह से सदियों से प्रशंसित है।

वर्तमान समय में भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बदल रही है। आत्मनिर्भरता, ग्रामीण उद्यमिता, निर्यात-केन्द्रित उत्पादन और जैविक-आधारित उद्योगों को नई गति मिल रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में मालदा का रेशम उद्योग न केवल स्थानीय किसान-कुटीर उद्योगों के लिए बल्कि पूरे देश के व्यापारिक ढांचे के लिए भी महत्वपूर्ण बन गया है। कृषि-आधारित उत्पादन, सूक्ष्म उद्योगों का विकास, महिला-सशक्तिकरण, रोजगार सृजन, निर्यात वृद्धि और ग्रामीण-शहरी अर्थव्यवस्था के संतुलन जैसे पहलुओं में मालदा का रेशम उद्योग प्रमुख योगदान रखता है।

यह लेख मालदा के रेशम उद्योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर आधुनिक चुनौतियों, खेती और व्यापार के लाभ, सरकारी योजनाओं, सामाजिक-आर्थिक प्रभावों और आम व्यक्ति के उपयोग तक सभी आयामों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

### 1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: मालदा रेशम की जड़ों की खोज

मालदा का इतिहास रेशम उद्योग से गहराई से जुड़ा है। मध्यकालीन बंगाल के दौरान यह क्षेत्र रेशम उत्पादन में अत्यधिक प्रगतिशील था। उस दौर में “गौर” और “पांडुआ” नामक प्राचीन नगर व्यापार के प्रमुख केंद्र हुआ करते थे। मुगल काल में मालदा का तसर और मुलबेरी रेशम देश भर के राजघरानों और व्यापारियों में लोकप्रिय था। विदेशी यात्रियों, विशेषकर यूरोपीय व्यापारियों ने मालदा के रेशम को उच्च गुणवत्ता और दीर्घायु के कारण खूब सराहा।

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में मालदा रेशम व्यापार का एक प्रमुख केंद्र बना। कंपनी ने यहां के कारीगरों को नियमित रूप से रेशमी कपड़ों, धागों और विशेषकर दस्तकारी वाले कपड़ों का निर्यात विदेशों में करने के लिए संगठित किया। इंग्लैंड में “Malda Silk” एक ब्रांड के रूप में जाना जाता था।

स्वतंत्रता के बाद भी मालदा का रेशम उद्योग कई उतार-चढ़ावों से गुजरते हुए आज तक अस्तित्व में बना हुआ है। हालांकि आधुनिक मशीनों और पावरलूमों के आने से पारंपरिक हस्तकरघा उद्योग को चुनौती मिली, फिर भी मालदा का रेशम अपनी विशिष्टता के कारण बाजार में हमेशा अलग स्थान बनाए रखता है।

### 2. मालदा में रेशम की प्रमुख प्रजातियाँ

मालदा मुख्य रूप से मुलबेरी सिल्क के लिए जाना जाता है, लेकिन यहां तसर और एंडी सिल्क का भी सीमित उत्पादन होता है।

(अ) मुलबेरी सिल्क

यह मालदा की पहचान है।

उच्च गुणवत्ता वाले कोकून (ककून) यहां की खासियत हैं धागा बेहद महीन, मुलायम और चमकीला होता है। साड़ी, दुपट्टा, कुर्ता, स्टोल, शॉल और फॉर्मल वियर बनाने में इसका व्यापक उपयोग होता है।

(ब) तसर सिल्क

प्राकृतिक, हल्का और टिकाऊ।

झारखंड और बिहार की सीमा से सटे क्षेत्रों में इसका प्रभाव देखा जाता है।

(स) एंडी सिल्क

सीमित उत्पादकता, लेकिन पर्यावरण-अनुकूल और देश-विदेश में पसंद किया जाने वाला उत्पाद।

### 3. वर्तमान समय में मालदा रेशम उद्योग की आर्थिक स्थिति

भारत की सिल्क इंडस्ट्री वर्तमान में कृषि और छोटे-मध्यम उद्योगों का मजबूत आधार बन चुकी है। देश में रेशम उत्पादन लगभग 40,000-45,000 टन सालाना के बीच है, जिसमें पश्चिम बंगाल की हिस्सेदारी लगभग 7-8 प्रतिशत के आसपास होती है। इनमें मालदा का योगदान अग्रणी है।

मालदा जिले में:

हजारों किसान शहतूत की खेती से जुड़े हैं,

कारिगर रेशम कातने, बुनाई, छपाई और डिजाइनिंग में लगे हैं,

बड़ी संख्या में महिलाएं घर-आधारित उत्पादन इकाइयों में काम करती हैं,

स्थानीय बाजार और उत्सव/मेलों में रेशमी वस्त्रों की मांग बनी रहती है।

डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन बिक्री मंचों, ई-कॉमर्स कंपनियों और सोशल मीडिया के कारण आज “Malda Silk” की पहुंच भारत के लगभग हर राज्य में और विदेशों तक बढ़ चुकी है।

### 4. रेशम उद्योग का कृषि से संबंध: शहतूत की खेती

(अ) शहतूत के पेड़ों की महत्ता

मुलबेरी (शहतूत) की पत्तियाँ रेशम कीटों के लिए मुख्य भोजन हैं। मालदा का मौसम शहतूत के पेड़ों के लिए अनुकूल है:

गर्मी मध्यम,

सर्दी हल्की,

आर्द्रता संतुलित,

समतल भूमि और गंगा के उपजाऊ मैदान

यही वजह है कि यहां की शहतूत की पत्तियाँ गुणवत्ता में श्रेष्ठ मानी जाती हैं।

(ब) किसानों के लिए लाभ

सामान्य फसलों की तुलना में अधिक लाभदायक।

एक बार पौधा लगाने पर कई वर्षों तक उत्पादन।

कम सिंचाई में भी फसल बढ़िया रहती है।

बाजार में कीमत स्थिर रहती है।

सरकारी सब्सिडी और प्रशिक्षण उपलब्ध।

(स) जैविक खेती का उभार

आजकल जैविक पद्धति से शहतूत की खेती की मांग बढ़ रही है।

इससे:

पत्तियों की गुणवत्ता सुधरती है,

कीटों को रोग कम होते हैं,

धागे की गुणवत्ता बेहतर होती है।

### 5. रेशम उद्योग में रोजगार और उद्यमिता की संभावनाएँ

मालदा का रेशम उद्योग आज भी ग्रामीण रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है।

रोजगार के प्रमुख क्षेत्र

1. शहतूत की खेती

2. रेशम कीट पालन

3. ककून उत्पादन

4. धागा कातना

5. बुनाई

6. रंगाई

7. डिजाइनिंग

8. मार्केटिंग और बिक्री

महिला-सशक्तिकरण

मालदा में रेशम उद्योग महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का बड़ा माध्यम है।

घर-आधारित कार्य

स्वयं सहायता समूह

प्रशिक्षण केंद्र

हैंडलूम आधारित यूनितें

महिलाएं बड़ी संख्या में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

### 6. व्यापारिक लाभ: स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संभावनाएँ

(अ) घरेलू बाजार

भारत में रेशम के प्रति पारंपरिक आकर्षण हमेशा मजबूत रहा है। शादी-समारोह, त्योहार, सांस्कृतिक

कार्यक्रम और फैशन उद्योग में रेशमी उत्पाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मालदा का रेशम:

सस्ता नहीं, पर अपनी गुणवत्ता के कारण मूल्यवान आकर्षक

टिकाऊ

विविध डिजाइनों में उपलब्ध

इससे व्यापारियों को अच्छा लाभ मिलता है।

(ब) अंतरराष्ट्रीय बाजार

हाल के वर्षों में भारतीय रेशम की मांग:

अमेरिका

यूरोप

मध्य-पूर्व

दक्षिण-पूर्व एशिया

जापान

जैसे बाजारों में तेजी से बढ़ी है।

मालदा के बुनकर निर्यात क्षमता बढ़ाने के लिए आधुनिक डिजाइनों, कंप्यूटराइज्ड पैटर्न और वैश्विक फैशन ट्रेंड का उपयोग कर रहे हैं।

(स) ई-कॉमर्स क्रांति

Amazon, Flipkart, Etsy, Ajio, Meesho जैसी कंपनियाँ आज छोटे उद्योगों को सीधे ग्राहक तक पहुंचा रही हैं।

इससे:

बुनकरों की आमदनी बढ़ी

बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई

राष्ट्रीय पहचान मिली

### 7. सरकारी योजनाएँ और सहायता

सरकार रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं पर काम कर रही है।

मुख्य योजनाएँ

1. सिल्क मार्क प्रमाणन

– गुणवत्ता सुनिश्चित करता है

– ग्राहकों में विश्वास पैदा करता है

2. सिल्क बोर्ड ऑफ इंडिया की सहायता योजनाएँ

– प्रशिक्षण

– सब्सिडी

– उपकरणों की उपलब्धता

3. एमएसएमई योजनाएँ

– लोन में रियायत

– कम ब्याज दर

– तकनीकी उन्नयन

4. प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)

– नए उद्यम शुरू करने में मदद

5. जिला उद्योग केंद्र (DIC)

– स्थानीय स्तर पर सुविधा, सलाह और योजना सहायता प्रदान करता है।

8. वर्तमान चुनौतियाँ

हालांकि मालदा का रेशम उद्योग विकसित हो रहा है, फिर भी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है।

मुख्य चुनौतियाँ

चीन और वियतनाम से आयातित सस्ते रेशम की प्रतिस्पर्धा

नई पीढ़ी का रुचि कम होना

मशीन-निर्मित उत्पादों का प्रभाव

सूखे/बाढ़ जैसी प्राकृतिक समस्याएँ

कीटों में बीमारियाँ

वित्तीय सहायता की कमी

मार्केटिंग ज्ञान का अभाव

### 9. समाधान और भविष्य की दिशा

(अ) तकनीकी उन्नयन

ई-लूम

ऑटो रीलींग मशीन

आधुनिक रंगाई

डिजाइनिंग में तकनीक का उपयोग

(ब) कौशल विकास

युवाओं और महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

डिजाइन, मार्केटिंग और ब्रांडिंग की शिक्षा

(स) ब्रांड निर्माण

“Malda Silk” को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ब्रांड बनाया जा सकता है।

(द) निर्यात केंद्र

मालदा में निर्यात हब की स्थापना से उद्योग की गति बढ़ेगी।

(इ) पर्यटन और रेशम

रेशम-टूरिज्म की अवधारणा:

बुनकरों के गाँवों में भ्रमण

रेशम बनाने की प्रक्रिया

स्थानीय उत्पादों की खरीद

यह रोजगार और पहचान दोनों बढ़ा सकता है।

#### 10. आम व्यक्ति के उपयोग के संदर्भ में मालदा रेशम

रेशम केवल विलासिता का उत्पाद नहीं रहा, बल्कि आम जीवन में भी इसका महत्व बढ़ा है।

उपयोग

साड़ी

सलवार-सूट

कुर्ता-पायजामा

दुपट्टा

होम डेकोरेशन (कुशन कवर, पर्दे, टेबल रनर)

फैशन डिजाइनर परिधानों में प्रयोग

उपहार सामग्री

त्योहार/शादी में परिधान

मालदा के रेशम उत्पाद उचित मूल्य में उच्च गुणवत्ता प्रदान करते हैं, जिसे सामान्य उपभोक्ता भी खरीद सकता है।

निष्कर्ष

मालदा का रेशम उद्योग भारतीय कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, ग्रामीण उद्यमिता और पारंपरिक हस्तशिल्प के अद्भुत संतुलन का उदाहरण है। यह उद्योग न केवल किसानों के लिए बल्कि कारीगरों, महिलाओं, छोटे व्यापारियों और बड़े फैशन डिजाइनरों के लिए भी जीवनदायिनी भूमिका निभाता है।

वर्तमान समय में जब देश आत्मनिर्भरता और स्थानीय उत्पादों को वैश्विक पहचान दिलाने पर जोर दे रहा है, तब “Malda Silk” भारतीय विरासत, कौशल और आर्थिक क्षमता का उज्ज्वल प्रतीक बनकर उभर सकता है।

सरकारी सहायता, तकनीकी विकास, युवा-उद्यमिता, मार्केटिंग कौशल और वैश्विक दृष्टिकोण—इन सभी के संयुक्त प्रयास से मालदा का रेशम भारत का एक अंतरराष्ट्रीय ब्रांड बन सकता है।

यह उद्योग न केवल आर्थिक वृद्धि बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक विकास और आम व्यक्ति के जीवन में सुंदरता और उपयोगिता दोनों को बढ़ाने की क्षमता रखता है।